कक्षा -नौवीं

पाठ-3

वर्तनी

प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

ई मा न दा र : इस उदाहरण में पहले स्थान पर 'ई', दूसरे स्थान पर 'मा' तीसरे स्थान पर 'न' चौथे स्थान पर 'दा' तथा पाँचवें स्थान पर 'र' बोलने से इसे इसी क्रम में लिखने से शब्द ' **ईमानदार** ' बना।

अतः लेखन में प्रयोग किये जाने वाले लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहा जाता है। वर्तनी' शब्द का अर्थ है- 'वर्तन' अर्थात 'अनुकरण करना'। वर्तनी भाषा के मौखिक रूप का अनुकरण करती है। उच्चारण करते समय जिस ध्वनि का उच्चारण जिस क्रम में होता है, उसे उसी क्रम में लिखा जाता है।

वर्तनी के प्रयोग की शुद्धता शब्द तथा वाक्य स्तर पर अति ज़रूरी है और इसके लिए वर्ण स्तरीय समुचित ज्ञान भी नितांत आवश्यक है। हम स्वर-व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, अयोगवाह, विसर्ग, हलंत, आगत ध्वनियों (आगत स्वर व आगत व्यंजन), विकसित ध्वनियों, स्वरों की मात्राओं और व्यंजनों के साथ उनका प्रयोग, संयुक्त व्यंजनों की लेखन विधि, द्वित्व वर्ण तथा वर्ण-विच्छेद आदि का अभीष्ट ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

किंतु यदि वर्ण के सम्बन्ध में उपर्युक्त ज्ञान न हो एवं व्याकरणिक नियमों की जानकारी न हो तो आमतौर पर लिखने में अनेक त्रुटियाँ हो जाती हैं। इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन व अभ्यास करने से इन त्रुटियों से बचा जा सकता है। वर्तनी की कुछ सामान्य अशुद्धियाँ इस प्रकार हैं–

1.स्वरों की मात्राओं की अशुद्धियाँ :

कई बार ह्रस्व की जगह दीर्घ तथा कई बार दीर्घ की जगह ह्रस्व स्वर के प्रयोग से अशुद्धियाँ हो जाती हैं। जैसे-

(i) 'अ' की जगह 'आ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आधीन	अधीन	अत्याधिक	अत्यधिक
आंडा	अंडा	आपराजिता	अपराजिता
आकाल	अकाल	आलौकिक	अलौकिक
दावात	दवात	अनाधिकार	अनधिकार
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	आसाधारण	असाधारण

(ii) 'आ' की जगह 'अ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	अहार	आहार
नराजगी	नाराज़गी	बजार	बाज़ार
अपात	आपात	अपूर्ति	आपूर्ति

(ii) 'इ' की जगह 'ई' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
नीती	नीति	रीती	रीति
अतिथी	अतिथि	उत्पत्ती	उत्पत्ति
प्राप्ती	प्राप्ति	कीरति	कीर्ति
ईनाम	इनाम	मुनी	मुनि
रवी	रवि	कवी	कवि
हानी	हानि	कालीदास	कालिदास
क्योंकी	क्योंकि	उन्नती	उन्नति

(iv) 'ई' की जगह 'इ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
निरोग	नीरोग	बिमारी	बीमारी

श्रीमति	श्रीमती	परिक्षा	परीक्षा
दिवार	दीवार	मिनार	मीनार
जिवन	जीवन	शितल	शीतल

(v) 'उ' की जगह 'ऊ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आयू	आयु	तरू	तरु
गुरू	गुरु	रूपया	रुपया
धूलाई	धुलाई	कूली	कुली
पशू	पशु	साधू	साधु

(vi) 'ऊ' की जगह 'उ' का प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कुदना	कूदना	खुनी	खूनी
गुँगा	गूंगा	पुर्ण	पूर्ण
जुता	जूता	शुरु	शुरू
पुज्य	पूज्य	शुन्य	शून्य
सुर्य	सूर्य	वधु	वधू

(vii) 'ए' की जगह 'ऐ' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ऐकता	एकता	ऐकांत	एकांत
ऐड़ी	एड़ी	ऐजेंसी	एजेंसी
ऐंबुलेंस	एंबुलेंस	ऐशियाई	एशियाई

(viii) ऐ की जगह 'ए' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
एब	ऐब	एयाशी	ऐयाशी
एक्य	ऐक्य	एच्छिक	ऐच्छिक

(ix) 'ओ' की जगह औ' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
औट	ओट	औछा	ओछा

(x) 'औ' की जगह 'ओ' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ओसत	औसत	ओरत	औरत

(xi) 'ऋ' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
रिण	ऋण	रिषि	ऋषि
रितु	ऋतु	रिगवेद	ऋग्वेद
क्रपा	कृपा	क्रित	कृत
करिति	कृति	क्रष्ण	कृष्ण
ग्रहस्थ	गृहस्थ	ग्रहिणी	गृहिणी
ग्रहीत	गृहीत	तरिष्णा	तृष्णा
नरिप	नृप	म्रिग	मृग
श्रृंगार	शृंगार	स्रष्टी	सृष्टि
ह्रिदय	हृदय	प्रथक	पृथक

2.नासिक्य व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

('ऋ', 'र' या 'ष' के बाद 'न' के आने पर उसे 'ण' हो जाता है तथा 'न' के बीच में कोई स्वर या कवर्ग, पवर्ग या अन्तःस्थ आने पर भी 'ण' हो जाता है)।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ऋन	ऋण	किरन	किरण
भूषन	भूषण	भरन	भरण
गुन	गुण	चरन	चरण
स्मरन	स्मरण	निरीक्षन	निरीक्षण
रामायन	रामायण	प्रान	प्राण

नोट : यदि इनमें ऊपर बताए वर्गों से कोई भिन्न वर्ण आये तो 'न' को 'ण' नहीं होगा। जैसे- रचना, प्रार्थना, गर्जना आदि।

3.अनुस्वार एवं अनुनासिक सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आंख	आँख	कँचन	कंचन
चांद	चाँद	गँगा	गंगा
ऊंट	ऊँट	पँगु	पंगु
ऊंचा	ऊँचा	पँच	पंच
कांच	काँच	कँगाल	कंगाल
दांत	दाँत	पँडित	पंडित
मांद	माँद	गँदा	गंदा
मांजना	माँजना	चँचल	चंचल
बांध	बाँध	चँदा	चंदा
बांटना	बाँटना	कँधा	कंधा
बांसुरी	बाँसुरी	चुँबक	चुंबक

4.'अल्पप्राण' और 'महाप्राण' सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

जिनके उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में बाहर आती है, वे व्यंजन अल्पप्राण हैं। वर्गों के पहले,तीसरे, पाँचवें वर्ण तथा 'य्' 'र्' 'ल्' 'व्' अल्पप्राण हैं।

जिनके उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में बाहर आती है, वे व्यंजन महाप्राण हैं । वर्गों के दूसरे, चौथे तथा 'श', 'ष', 'स', 'ह' महाप्राण हैं। इनके ग़लत उच्चारण के कारण लोग लिखने में भी ग़लतियाँ करते हैं। जैसे:

(i) महाप्राण की जगह अल्पप्राण के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अमिताब	अमिताभ	साबार	साभार
गोड़ा	घोड़ा	भूक	भूख
झूट	झूठ	गड्डा	गड्ढा
निष्टा	निष्ठा	घनिष्ट	घनिष्ठ
धनाड्य	धनाढ्य	दनवान	धनवान

(ii) अल्पप्राण की जगह महाप्राण के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
संतुष्ठ	संतुष्ट	हिंदुस्थान	हिंदुस्तान
मेघनाथ	मेघनाद	सीधा-साधा	सीधा-सादा
अभीष्ठ	अभीष्ट	धब्भा	धब्बा
संघठन	संगठन	चिढ़चिढ़ा	चिड़चिड़ा

5. अक्षर लोप सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अध्यन	अध्ययन	उचारण	उच्चारण
आछादन	आच्छादन	उज्वल	उज्ज्वल
सजन	सज्जन	जगनाथ	जगन्नाथ

6. 'व' और 'ब' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'व' के उच्चारण में निचला होंठ ऊपर वाले दाँतों के अगले हिस्से के पास जाता है और दोनों होंठ गोल हो जाते हैं जबकि 'ब' के उच्चारण में दोनों होंठ जुड़ जाते हैं।

'व' और 'ब' सम्बन्धी अशुद्धियाँ अशुद्ध उच्चारण के कारण अधिक होती हैं। शुद्ध उच्चारण के आधार पर इस त्रुटि को दूर किया जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बिचार	विचार	पूर्ब	पूर्व
वंदना	बंदना	ब्यर्थ	व्यर्थ
बर्षा	वर्षा	ब्यापक	व्यापक
ब्रत	व्रत	नबाब	नवाब
बिलास	विलास	बनस्पति	वनस्पति

विशेष : संस्कृत में 'व' के शब्द अधिक हैं। जबकि हिंदी में 'ब' वाले शब्द अधिक हैं। संस्कृत के कई 'व' वाले शब्द हिंदी में 'ब' रूप धारण कर लेते हैं। जैसे-वसंत, विना आदि हिंदी में बसंत, बिना रूप में प्रयुक्त होते हैं।

7. 'श', 'ष', 'स' सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

उच्चारण दोष व व्याकरणिक नियमों की जानकारी के अभाव में इनमें वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ होती हैं।

ध्यान रखें कि

(क) टवर्ग से पहले 'ष' का प्रयोग होता है।

(ख) 'ऋ' के बाद प्रायः 'ष' का प्रयोग होता है।

(ग) विसर्ग से पूर्व 'इ', 'उ', स्वर हों तथा बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई हो तो विसर्ग को 'ष्' हो जाता है। जैसे-
निः + कलंक = निष्कलंक, धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

(घ) जहाँ 'श' और 'ष' एक साथ आ जायें तो वहाँ 'श' के बाद 'ष' आता है। जैसे- शेष, शीर्ष आदि।

(i) 'ष' के स्थान पर 'श' तथा 'ष्' के स्थान पर 'श्' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शोडश	षोडष	कश्ट	कष्ट
नश्ट	नष्ट	शिश्ट	शिष्ट
कृशि	कृषि	वृश्टि	वृष्टि
निश्कपट	निष्कपट	निश्फल	निष्फल
दुश्कर	दुष्कर	विशेश	विशेष

(ii) 'श' के स्थान पर 'स' तथा 'श्' के स्थान पर 'स्' के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :

(क) जहाँ 'श' और 'स' एक साथ आयें वहाँ अधिकतर 'श' पहले आता है। जैसे- शस्य

(ख) 'च', 'छ' से पहले 'श्' आता है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
साशन	शासन	साशक	शासक
प्रसंशा	प्रशंसा	नृसंश	नृशंस
निस्चल	निश्चल	निस्चय	निश्चय
हरिस्चंद्र	हरिश्चंद्र	निस्छल	निश्छल

(ii) 'स' के स्थान पर 'श' तथा 'स्' के स्थान पर 'श्' के प्रयोग करने से होने वाली अशुद्धियाँ :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
नमश्ते	नमस्ते	नमश्कार	नमस्कार
दुश्शाहस	दुस्साह	सनिश्तेज	निस्तेज
प्रशाद	प्रसाद	विकाश	विकास

धन्यवाद

डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत,हिंदी),एम.एड.,पीएच.डी(हिंदी)